

शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक २७ : नई दिल्ली : ७-१३ अक्टूबर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५२ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी ६१, सर्व १४३, सानंद जसोल में चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। श्रद्धालुओं के आवागमन का क्रम निरंतर जारी है। ८-१० अक्टूबर को अ.भा. महिला मंडल का अधिवेशन, २-४ नवम्बर को अभातेयुप का अधिवेशन एवं ५ नवम्बर को जसोल में भव्य दीक्षा समारोह आयोजित होगा।

समझो पार्यों को-११

आचार्य महाश्रमण

आर्हत वाङ्मय में दो बंधन बताए गए हैं--**पडिक्कामि दोहिं बंधणेहिं-रागबंधणेणं दोसबंधणेणं**। राग भी एक बंधन है और द्वेष भी एक बंधन है। अध्यात्म की साधना में राग-द्वेष का त्याग करना आवश्यक होता है। आत्मा का साक्षात्कार करने के लिए कौन आदमी कितना राग-द्वेष से मुक्त हुआ है, बस यही कसौटी है। आत्मा की शुद्ध अवस्था का नाम ही परमात्मा है। जैन दर्शन में कहा गया है कि आत्मा साधना के द्वारा परमात्म पद को प्राप्त हो सकती है। जिस प्रकार सोना प्रारंभिक अवस्था में मिट्टी से मिला-जुला रहता है, किन्तु जब उससे मिट्टी अलग कर दी जाती है, तब स्वर्ण में निखार आ जाता है। इसी प्रकार आत्मा कर्मों की मिट्टी से आवृत या ढकी हुई है, उन कर्मों को तपस्या, साधना के द्वारा दूर कर दिया जाता है, तब आत्मा का शुद्ध स्वरूप प्रकट हो जाता है।

राग-द्वेष की तरंगों से जिसका मन तरंगित नहीं होता है, वह व्यक्ति आत्मा का साक्षात्कार कर सकता है। अन्य किसी को साक्षात्कार का योग प्राप्त नहीं हो सकता। एक तालाब में पानी भरा हुआ है। कोई उस तालाब के भीतरी भाग को देखना चाहे तो उसके लिए दो शर्तें हैं--पहली शर्त तो यह कि तालाब का पानी स्वच्छ होना चाहिए और दूसरी शर्त है तालाब का पानी स्थिर होना चाहिए। तालाब का पानी गंदा है और उसमें तरंगें उठ रही हैं तो तालाब के तल को देखा नहीं जा सकता। इसी प्रकार जब राग-द्वेष की तरंगें शान्त हो जाएंगी और भाव शुद्ध हो जाएंगे, तब आदमी आत्मसाक्षात्कार कर सकेगा।

सामान्य आदमी कभी राग में प्रवृत्त हो जाता है और कभी द्वेष में चला जाता है। गुरु शिष्य को उसके हित के लिए डांटते हैं तो उसे द्वेष नहीं कहा जा सकता, जैसे--किसी शिष्य ने एक बार गलती की। गुरु ने उसे सचेत किया। शिष्य ने फिर दूसरी बार गलती की, गुरु ने फिर सचेत किया। तीसरी बार गलती की तो गुरु ने डांटा। स्थूल भाषा में उसे गुस्सा कहा जा सकता है। लेकिन उसके मूल में भावना यही है कि शिष्य का प्रमाद छूट जाए। शिष्य के प्रमाद के निवारण के लिए गुरु ने कड़ाई से कहा। उनका आक्रोश या गुस्सा, जो शब्दों में है, वह शिष्य के हितार्थ होता है, क्योंकि उसके पीछे भावना दुःख देने की नहीं है, शिष्य का हित करने की, उसका विकास कराने की है। डॉक्टर या कंपाउण्डर इंजेक्शन लगाता है, तब एक बार थोड़ा-सा दर्द होता है। परन्तु डॉक्टर की भावना रोगी को दुःख पहुंचाना नहीं है, रोगी को स्वास्थ्य लाभ देना है। इसी तरह गुरु उलाहना देते हैं, थोड़ी-सी कड़ाई करते हैं तो वह शिष्य के लाभ के लिए की जाती है। वहां उद्देश्य कष्ट पहुंचाना नहीं, शिष्य का निर्माण करना है। संस्कृत साहित्य में तो यहां तक कहा गया--

**गीर्भिर्गुरुणांपरुषाक्षराभिः, तिरस्कृता यान्ति नरा महत्त्वम् ।
अलब्धशाणोत्कषणा नृपाणां, न जालु मौलौ मणयो वसन्ति । ।**

जो शिष्य गुरु की कठोर वाणी को, तिरस्कार को सहन कर लेता है, वह शिष्य महानता को प्राप्त हो जाता है। जिस प्रकार जो मणि शाण पर खरी नहीं उतरती है, वह राजा के मुकुट में स्थान पाने योग्य नहीं होती है, उसी तरह जो शिष्य गुरु के उपालंभ को सहन न कर सके, उलाहने को झेल न सके, उसके महान बनने में थोड़ा अवरोध है।

गुरु का उलाहना परिशोधन के लिए, विकास के लिए और परिष्कार के लिए होता है। हमारे धर्मसंघ में तो यहां तक कहा गया है कि गुरु उलाहना दें तो यह समझो कि वे अमृत का प्याला पिला रहे हैं। कितनी श्रद्धा की बात है। यानी उस उलाहने को भी बहुत सम्मान के साथ ग्रहण करना चाहिए। गुरु की डांट को, गुरु के कड़े ऐक्शन का कभी भी बुरा नहीं मानना चाहिए।

सेवा, समर्पण और श्रद्धा का भाव साधु-साध्वियों और समण-समणियों में तो है ही, श्रावक-श्राविकाओं में भी कम नहीं है। हमारे श्रावक-श्राविकाएं भी गुरु इंगित के प्रति इतने समर्पित हैं कि उस पर गौरव किया जा सकता है। इतने पढ़े-लिखे श्रावक हैं, वेल् एजुकेटेड हैं, समाज में बड़े-बड़े पदों पर हैं, पर गुरु-इंगित पर बिल्कुल प्रणत हो जाते हैं। वे कोई भी काम करने से पहले गुरु-इंगित को जानने और समझने का प्रयास करते हैं। गुरु इंगित को जानने की यह भावना श्रावक-श्राविका समाज का आभूषण है। यह श्रद्धा-समर्पण की भावना हमें परंपरा से प्राप्त है। इस परंपरा को बनाए रखना हमारा कर्तव्य है।

आदमी में द्वेष का भाव नहीं आना चाहिए। कभी कोई आपस में बात भी हो जाए तो उसे लंबाना नहीं चाहिए। निकट के दो बर्तन भी आपस में टकरा जाते हैं। इसी तरह साथ-साथ रहने वाले व्यक्तियों में क्षणिक विवाद भी हो सकता है। शीघ्र ही उसका समाधान कर लेने का प्रयास करना चाहिए। मन में ईर्ष्या का भाव नहीं होना चाहिए। अमुक तो आगे बढ़ गया और मैं पीछे रह गया, इसकी न तो मन में कोई कुंठा पनपनी चाहिए, न ईर्ष्या और जलन का भाव पैदा होना चाहिए। दूसरों के विकास को देखकर प्रमोद भावना जागे, प्रसन्नता हो कि उसने कड़ा श्रम किया तो उसका विकास हुआ और हो रहा है। इसी तरह मैं भी परिश्रम करूं तो मेरा भी विकास हो। द्वेष भाव से उसे गिराने की भावना मन में नहीं आनी चाहिए। ईर्ष्या पुरुषों में भी हो सकती है और स्त्रियों में भी हो सकती है। हालांकि संस्कृत साहित्य में तो यह कहा गया है--'नहि नार्यो विनेर्ष्या।' नारी ईर्ष्या के बिना रहे, ऐसा हो नहीं सकता। यानी नारी में ईर्ष्या होती है। कवि ने ऐसा लिखा तो अपने अनुभव के आधार पर ही लिखा होगा। लेकिन नारी हो या पुरुष, ईर्ष्या किसी में भी नहीं रहनी चाहिए।

दो महिलाएं थीं, दोनों पड़ोसन थीं, परस्पर में उनकी बनती नहीं थीं, दोनों एक-दूसरे से ईर्ष्या-द्वेष करती थीं। जब भी उन्हें मौका मिलता, एक-दूसरे का अहित करने का प्रयास करतीं। एक दिन दोनों साथ-साथ देवी के मन्दिर में चली गईं। बड़ी देर तक पूजा-स्तुति की। देवी प्रसन्न हो गईं। बोलीं--'तुम दोनों की भक्ति से मैं प्रसन्न हूं।' फिर पहली महिला की ओर उन्मुख होकर कहा--'मांगो, तुम्हें क्या चाहिए?'

वह महिला प्रसन्न होकर बोली--'जगदम्बे! मेरी एक ही मांग है, यह बहन जो बैठी है, इसे तुम जितना दो, मुझे उससे दुगुना देना।'

दूसरी महिला ने सोचा--'आज यह पकड़ में आ गई। अब इसे मजा चखाना चाहिए।' वह बोली--'जगदम्बे! पड़ोसन बहनजी को जो चाहिए, उन्होंने मांग लिया। अब मेरी मांग भी सुन लो। आप प्रसन्न हैं तो कृपा कर मेरी एक आंख फोड़ दें।' देवी ने तत्काल 'तथास्तु' कह दिया। ईर्ष्या और द्वेष भाव से दग्ध उस महिला ने अपनी एक आंख नष्ट कर पड़ोसन को अंधी बना दिया।

यह ईर्ष्या का भाव है जो दूसरों को दुःख देने के साथ स्वयं को दुःखी बना सकता है। हम दे सकें तो दूसरों को आध्यात्मिक सहयोग दें, मानसिक प्रसन्नता दें, किसी के कल्याण में निमित्त बनें, सहभागी बनें। किसी को शारीरिक या मानसिक संताप देना पाप है। किसी के प्रति द्वेष और अमंगल की भावना नहीं

होनी चाहिए। हम साधु-साधियों के लिए तो यह अभीष्ट है कि हम अपनी साधना का विकास करें, कषाय को मंद करने का प्रयास करें। मोह का ही एक नाम है--कषाय। जो भी राग-द्वेषात्मक पाप हैं, वे सब कषाय हैं। एक शब्द में इन्हें कषाय कह सकते हैं, दो शब्दों में राग-द्वेष कह सकते हैं और चार शब्दों में क्रोध, मान, माया, लोभ कहा जा सकता है। इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए और यह प्रयास होना चाहिए कि भीतर के कषाय हमारी बाह्य प्रवृत्ति में न आएँ। साधना की सफलता कषाय क्षीणता पर निर्भर है। कषाय प्रतनु हो गए, क्षीण हो गए तो साधना अपने आप सिद्ध होती चली जाती है।

हमारी साधना के विभिन्न उपक्रम हैं। उनके तार कषायविमुक्ति से जुड़े होते हैं। एक साधक कभी ध्यान करता है, स्वाध्याय करता है, कभी सेवा करता है। इन सबके पीछे कारण एक ही है--कषायमुक्ति। कषायमुक्ति हो गई तो मोक्ष में देर नहीं है। साधक का लक्ष्य हो और तदनु रूप प्रयास हो तो वह कषायमंदता की ओर अग्रसर होता चला जाता है।

हमारे धर्मसंघ के पांचवें आचार्य हुए हैं आचार्य मघवा। उनकी संतता अपने आप में विशिष्ट थी, इसीलिए उनके लिए कहा गया--वीतरागकल्प आचार्य मघवा। वे वीतरागतुल्य थे। उनकी क्षमाशीलता की साधना हमारे लिए प्रेरणाप्रद है। एक बार जयाचार्य ने व्याख्यान के दौरान सबके बीच युवाचार्य मघवा को उपासना दिया। युवाचार्य मघवा ने बड़ी विनम्रता के साथ उस उपासना को शिरोधार्य किया। कषाय यदि मंद हैं तो उलाहने आदि को आसानी से सहा जा सकता है, अन्यथा मन में नकारात्मक प्रतिक्रिया भी हो सकती है।

सरदारशहर में एक व्यक्ति ने मघवागणी को बतलाया कि अमुक व्यक्ति आपको गालियाँ दे रहा था। मघवागणी ने कहा--'जब तक मैं स्वीकार न कर लूँ, तब तक मुझे कोई गाली कैसे दे सकता है?' वह व्यक्ति--'मैंने स्वयं अपने कानों से गालियाँ सुनी हैं। वह आपका ही नाम ले-लेकर बक रहा था। मैं उस समय वहीं उपस्थित था।'

मघवागणी--'हो सकता है वह अपनी शक्तिमत्ता का प्रदर्शन करने के लिए ऐसा कह रहा हो। न मैंने उन्हें सुना और न स्वीकारा, तब मेरे लिए तो वे किसी दूसरे को दी गई गालियों के समान ही हैं।'

साधक हर बात को ग्रहण न करे। ग्रहण उसी बात को करे, जो उसकी साधना में सहायक हो सकती है। हर बात पर वह प्रतिक्रिया भी न करे। अनपेक्षित बात को दिमाग में न रखे, उसे निकाल दे। वह बर्फ की शिला जैसा बन जाए, जिस पर पड़नेवाली धूल, मिट्टी आदि उस पर टिकती नहीं, तुरन्त फिसल जाती है और बर्फ की शिला श्वेत, स्वच्छ और चमकदार बनी रहती है। व्यर्थ की बातें दिमाग में टिक गईं तो वे ग्रंथि बनकर तनाव पैदा कर सकती हैं।

आचार्य भिक्षु एक विशिष्ट साधक पुरुष थे। भावितात्मा अनगार जैसे संत थे। उन्होंने कितना तप तपा, कितनी साधना की और कितनों को सही मार्ग दिखाया। उनमें कोई विशिष्ट पराक्रम था। दूसरों के आध्यात्मिक कल्याण के लिए वे यदा-कदा अपनी निद्रा का विसर्जन कर रात्रि का काफी समय लगाकर उन्हें संबोध देने का प्रयास करते। श्रावकों को तत्त्वबोध देना होता या किसी शुद्ध मन वाले व्यक्ति की जिज्ञासाओं को समाहित करना होता तो उनके लिए विश्राम और शयन गौण हो जाता, उसे प्रतिबोध देना मुख्य हो जाता। वे संकरे और सामान्य स्थानों में कैसे विराजे होंगे? अतिशय विरोध के वातावरण में क्या स्थिति रही होगी? कदम-कदम पर आने वाली कठिनाइयों और प्रतिकूलताओं को कैसे झेला होगा। हमें तो मानो शासन के पुण्य प्रताप से अनुकूलताएं प्राप्त हैं।

हमारे जीवन में प्रतिकूलताएं आएँ तो हम उचित रूप में उन्हें सहन करने का प्रयास करें। अनुकूलताओं में भी सम रहने का प्रयास करें और अपनी साधना को आगे बढ़ाते रहें। हम सभी में धर्म की चेतना, साधना की चेतना का विकास होता रहे। हम द्वेष से बचकर प्रमोद भावना और सहयोग की भावना से ओतप्रोत बने रहें, यह काम्य है।"

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

आठ कर्मों से जीवन की व्याख्या

२६ सितम्बर। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा—‘प्राणी जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल उसे भोगना पड़ता है। जैनदर्शन में आठ कर्म माने गए हैं। उन आठ कर्मों के द्वारा जीवन की व्याख्या की जा सकती है। ज्ञानावरणीय कर्म व्यक्ति के ज्ञान को आवृत करता है। उसका क्षयोपशम होने पर ज्ञान विकसित होता है। ज्ञान का विकास हमारे जीवन का महत्वपूर्ण आयाम है। वेदनीय कर्म का संबंध शारीरिक साता और असाता के साथ है। आयु का संबंध आयुष्य कर्म के साथ है। दृष्टिकोण सम्यक् है अथवा मिथ्या, यह मोहनीय कर्म पर निर्भर है। स्वभाव का संबंध भी मोहनीय कर्म के साथ है। मोहनीय कर्म के उदय के कारण क्रोध आता है तो उसके अभाव में क्रोध उपशान्त रहता है अथवा क्षीण हो जाता है। प्रतिष्ठा, नाम, ख्याति आदि नाम गोत्र कर्म से संबद्ध हैं। अन्तराय कर्म कार्यों में अवरोधक बनता है। इस प्रकार जीवन का निर्धारण आठ कर्मों के अनुसार होता है। कर्मवाद के सिद्धान्त के साथ हमारा जीवन गहराई से जुड़ा हुआ है। जो पाप कृत्यों में रचा-पचा रहता है, वह सघन पाप कर्मार्जन कर लेता है। व्यक्ति सम्यक् आचरण के द्वारा इनसे बचने का प्रयास करे।’

प्रवचन के उपरान्त आचार्यवर ने सरस शैली में ‘डालिम चरित्र’ आख्यान का वाचन किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ। श्रीमती दीपमाला भण्डारी ने गीत का संगान किया। नोहर में चतुर्मास कर रही साध्वी विनयश्रीजी ‘द्वितीय’ (श्रीडूंगरगढ़) की प्रेरणा से भरे गए अणुव्रत के १८०० तथा कर्मणा जैन के ३०० संकल्प पत्र पूज्यप्रवर को उपहृत किए गए। पूज्यवर के पावन सान्निध्य में आज से अष्टदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का शुभारंभ हुआ।

बंधन का कारक मोहकर्म

२७ सितम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा—‘व्यक्ति मोहवश पापकर्म का अर्जन कर लेता है। पापकारी प्रवृत्ति की पृष्ठभूमि में मोहकर्म का हाथ होता है। आठ कर्मों में मोहकर्म बंधन का कारक बनता है। मन, वचन और कार्य की प्रवृत्ति शुभ और अशुभ—दोनों प्रकार की हो सकती है। मोह से युक्त प्रवृत्ति अशुभ और उससे मुक्त प्रवृत्ति शुभ होती है। मोहनीय कर्म अनादिकाल से आत्मा से संबद्ध है, इसलिए आत्मा अनादिकाल से जन्म-मरण करती आ रही है।’

कालचक्र के दो भेदों—अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी का उल्लेख करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा—‘काल का चक्र हर क्षण गतिमान है। अवसर्पिणी काल में क्रमशः ह्रास और उत्सर्पिणी में क्रमशः विकास होता है। दोनों काल में चौबीस-चौबीस तीर्थंकर होते हैं। मनुष्य जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है। शुभ योगों से निर्जरा के साथ पुण्य का बंध तथा अशुभ योगों से पापकर्म का बंध होता है। व्यक्ति चिंतन करे कि वह अगर साधु न बन सके तो कम से कम दुर्गति में ले जाने वाले पाप कर्मों का बंध तो न करे। वह यथासंभव अध्यात्म की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करे। शक्ति का सम्यक् उपयोग होना चाहिए। उसका नियोजन साधना और पवित्र कार्यों में करने का प्रयत्न करना चाहिए।’

प्रवचन के पश्चात आचार्यवर ने ‘डालिम चरित्र’ आख्यान का वाचन किया। जोरहाट (असम) से पदार्पण की प्रार्थना के साथ समागत संघ की ओर से श्री सुजानगढ़ दूगड़ ने भावाभिव्यक्ति की।

मंजिल की प्राप्ति के लिए समर्पण आवश्यक

२८ सितम्बर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--‘मनुष्य शरीर धारण करता है और उसे टिकाए रखने के लिए प्रयास भी करता है। चौबीस घंटों में आदमी का काफी समय इसी काम में लग जाता है। भोजन, नींद, स्नान आदि कार्य शरीर के लिए किए जाते हैं। इतना सब होते हुए भी शरीर एक दिन नष्ट हो जाता है। फिर इस नाशवान शरीर के लिए व्यक्ति इतना समय क्यों लगाए? इस शरीर से क्या लाभ होगा?

आगम के आधार पर समाधान प्रदान करते हुए परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कहा--‘शरीर के द्वारा पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा की जा सकती है। शरीर धारण करने के पीछे साधक का लक्ष्य भी यही होना चाहिए। जब ऐसा लगे कि शरीर साधना में सहयोगी नहीं बन रहा है तो यथा अवसर संलेखना-संधारे के द्वारा आत्मकल्याण करना चाहिए। साधना के लिए उसके प्रति निष्ठा और समर्पण भाव का होना आवश्यक है। समर्पण के अभाव में मंजिल की प्राप्ति कैसे होगी? मंजिल की प्राप्ति के लिए उसके प्रति आस्था, समर्पणभाव और तदनु रूप पुरुषार्थ का होना अपेक्षित है।’

आचार्यप्रवर ने आगे कहा--‘अध्यात्म की साधना में रत साधु को ‘एगप्पमुहे’ एक आत्मा की ओर अभिमुख होना चाहिए। वह चिंतन करे कि मैं निर्जरा के लिए क्या विशेष उपक्रम कर रहा हूं और मेरा समय शुभयोगों में व्यतीत हो रहा है या नहीं? साधु के द्वारा कोई भी ऐसा आचरण न हो, जो उसे पापश्रमण बनने की दिशा में ले जाए।’

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रवचन के पश्चात शुक्ला त्रयोदशी होने के कारण ‘हाजरी’ का वाचन करते हुए साधु-साधवियों को पावन पाथेय प्रदान किया। नवदीक्षित साध्वी प्रबुद्धयशाजी, साध्वी विधिप्रभाजी एवं साध्वी हिमांशुप्रभाजी ने लेखपत्र का उच्चारण किया। पूज्यप्रवर ने तीनों साधवियों को प्रोत्साहनस्वरूप तीन-तीन कल्याणक बक्सीस किए। इसके पश्चात मुनिवृन्द ने पंक्तिबद्ध तथा साधवियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मंत्री मुनिश्री को बक्सीस प्रदान करते हुए कहा--‘गुरुकुलवास और बहिर्विहार में श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री के उपकरणों की सिलाई, रंगाई तथा रजोहरण प्रक्षालन का कार्य समुच्चय में रहे।’ मंत्री मुनिश्री ने पूज्यवर के अनुग्रह को बद्धांजलि खड़े-खड़े प्रणत भाव से स्वीकार किया।

मुमुक्षु कुणाल (समदड़ी) और उसके परिजनों की प्रार्थना पर आचार्यवर ने उसे १६ जनवरी २०१३ को बालोतरा में समायोज्य दीक्षा समारोह में मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की। श्री भोजराज बैद (नोखा-कोलकाता) ने काव्यस्वरों में अपने भावोद्गार व्यक्त किए। श्रीगंगानगर अंचल से समागत संघ की ओर से महिला मंडल द्वारा गीत का संगान किया गया। श्री जैन श्वेताम्बर आंचलिक समिति के अध्यक्ष श्री कृष्णकुमार जैन ने संपूर्ण अंचल की ओर से श्रीचरणों में प्रार्थना प्रस्तुत की। मुनि अशोककुमारजी ने अपनी जन्मभूमि की ओर से प्रस्तुत प्रार्थना के संदर्भ में भावाभिव्यक्ति की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में शिक्षा विभाग (माध्यमिक) जिला बाडमेर और जीवनविज्ञान अकादमी जसोल के तत्त्वावधान में समायोजित द्विदिवसीय जीवनविज्ञान विद्यार्थी-शिक्षक प्रशिक्षण शिविर आज परिसंपन्न हुआ। इस शिविर में बाडमेर जिले के साठ विद्यालयों के एक-एक शिक्षक तथा दो-दो विद्यार्थी संभागी बने। संभागियों को परम श्रद्धेय आचार्यवर से मंगल पाथेय प्राप्त हुआ। शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि मदनकुमारजी तथा प्रशिक्षक श्री हनुमानमल शर्मा ने प्रशिक्षण दिया। जीवन विज्ञान अकादमी, जसोल के संयोजक श्री रमेश बोहरा ने अपने विचार व्यक्त किए। इस संदर्भ में श्री नरेश कश्यप एवं श्री पुखराज खारवाल ने भी भावाभिव्यक्ति दी। प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री श्री शान्तिलाल भंसाली ने आभार ज्ञापित किया।

भीतर से जागृत रहो

२६ सितम्बर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--‘निद्रा के दो प्रकार हैं--द्रव्य निद्रा और भाव निद्रा। प्राणी द्रव्य निद्रा लेते हैं। विशिष्ट साधक निद्राजयी भी बन सकते हैं। निद्रा विजय जीवन की विशिष्ट उपलब्धि होती है। भगवान महावीर ने अपने साधनाकाल में बहुत कम नींद ली। स्वास्थ्य की दृष्टि से समुचित मात्रा में नींद लेना आवश्यक माना गया है। साधक का आहार, गमन, शारीरिक चेष्टाएं आदि सभी क्रियाएं संयमित होनी चाहिए। उसका जागना और सोना भी संतुलित रूप में हो। अधिक नींद और अधिक जागरण साधना में बाधक बन सकता है। प्रेक्षाध्यान पद्धति के अन्तर्गत कायोत्सर्ग का प्रयोग निर्दिष्ट किया गया है। मुनि के लिए तो बार-बार कायोत्सर्ग करने का विधान है।’

आचार्यवर ने आगे कहा--‘जो व्यक्ति असंयम, मूर्च्छा और प्रमाद में रहता है, वह जागता हुआ भी सोया रहता है। अज्ञानी बाहर से जागृत रहता हुआ भी भीतर से सोया रहता है और ज्ञानी द्रव्य निद्रा में लीन होते हुए भी भीतर से जागृत रहता है। सूर्योदय से पूर्व निद्रा का त्याग अनेक दृष्टियों से लाभदायी बन सकता है। किसी संस्था अथवा संगठन के कार्यकर्ता स्वयं जागृत रहकर ही औरों को जागरूक बना सकते हैं। मनुष्य अपने विवेक को जागृत रखता हुआ पाप कर्मों से बचने का प्रयास करे।’

पूज्यप्रवर ने प्रवचन के पश्चात ‘डालिम चरित्र’ आख्यान का वाचन किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ। श्री विजयसिंह घोड़ावत (जयसिंहपुर) ने गीत का संगान किया तथा नोहर से समागत श्री उम्मेदमल बरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने अपनी संगठन यात्रा का विवरण प्रस्तुत करते हुए पूज्य आचार्यवर के मंगल आशीर्वाद की याचना की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--‘महासभा के अध्यक्ष हीरालालजी मालू अभी यात्राओं में लगे हुए हैं। खूब यात्राएं कर रहे हैं। इनके सामने गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी का बड़ा कार्य है। महासभा का जन्मशताब्दी वर्ष भी सन्निकट है। महासभा की अन्यान्य गतिविधियां भी हैं। श्रावक समाज की आध्यात्मिक संभाल करना भी दायित्वपूर्ण कार्य है।’

आज से परमपूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में द्विदिवसीय प्रेक्षा प्रशिक्षक सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम में वरिष्ठ प्रशिक्षक श्री एन.सी.जैन तथा श्री राजेन्द्र मोदी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। अहमदाबाद के आयुक्त श्री के.एल.माहेश्वरी ने आचार्यवर के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

रावणा राजपूत समाज के बीच

३० सितम्बर। आज प्रातः परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर नशामुक्त जसोल अभियान के अन्तर्गत रावणा राजपूत समाज के मालाणी महादेव मन्दिर में पधारे। इस अवसर पर मंदिर के बाहर की चौक में रावणा राजपूत समाज के लगभग चार सौ लोग उपस्थित थे। उन्हें संबोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा--‘मानव जीवन बहुत दुर्लभ है। इस जीवन में साधना करते-करते व्यक्ति भगवत्ता को संप्राप्त कर सकता है। अपने विशिष्ट प्रण-संकल्प को निभाने के लिए प्राणों की परवाह नहीं करनी चाहिए। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों की अनुपालना से जीवन का कल्याण हो सकता है।’ पूज्य आचार्यप्रवर की प्रेरणा से अभिभूत, इन्द्रसिंह, राजेन्द्रसिंह, मोहनसिंह आदि ने शराब छोड़ी तो देवीसिंह, नटवरसिंह व अन्य ने तम्बाकू व धूम्रपान का परित्याग किया। इस प्रकार अनेकानेक व्यक्ति पूज्यचरणों में आए और नशामुक्त बनने का संकल्प अभिव्यक्त किया। दो व्यक्तियों ने मांसाहार का भी परित्याग किया। श्री आनंदसिंह ने गीत प्रस्तुत किया। पूर्व सरपंच श्री ईश्वरसिंह चौहान ने आचार्यवर का मन्दिर प्रांगण में स्वागत किया। आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व और

पश्चात् मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि पृथ्वीराजजी (जसोल) एवं मुनि जितेन्द्रकुमारजी के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। रावणा राजपूत समाज के जिलाध्यक्ष श्री गोरधनसिंह ने आभार ज्ञापित किया।

व्याधि, आधि और उपाधि की विमुक्ति से समाधि संभव

वीतराग समवसरण में आयोजित कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने रविवारीय विशेष प्रवचनमाला के अन्तर्गत 'मूल्य तनाव प्रबंधन का' विषय पर प्रवचन करते हुए कहा--'व्यक्ति सुखी, शान्त व समाधिमय जीवन जीना चाहता है। एक प्रसिद्ध शब्द है चित्तसमाधि। यह जीवन के लिए आवश्यक है। चित्तसमाधि में कुछ बाधाएं हैं। सबसे पहली बाधा है--व्याधि। शारीरिक बीमारी से शान्ति व समाधि में बाधा उत्पन्न होती है। यह शरीर व्याधियों का घर है। कब कौन-सी बीमारी उभर आए, कुछ कहना कठिन है।

आधि दूसरी बाधा है, जो मानसिक पीड़ा से संबंधित है। किसी के द्वारा मनोनुकूल कार्य न होने से या अपमानित किए जाने पर व्यक्ति का मन खिन्न व व्यथित हो जाता है। यह मानसिक उद्वेलन समाधि में बाधा है। चिंतातुर व्यक्ति भीतर ही भीतर दग्ध होता रहता है। चिंता चिंता के समान है। अन्तर सिर्फ इतना है कि चिंता निर्जीव को जलाती है, जबकि चिंता सजीव को जला डालने में सक्षम है। चिंतन का परिष्कार करके तथा मन को समझा कर मानसिक तनाव का प्रबंधन कर सकते हैं।

तीसरी बाधा उपाधि एक भावात्मक बीमारी है। हमारी आन्तरिक वृत्तियां--क्रोध, अहंकार, माया, घृणा आदि भावात्मक तत्त्व हैं। इन तीनों से मुक्त व्यक्ति समाधि को प्राप्त कर सकता है।'

तनाव मुक्ति के संदर्भ में मार्गदर्शन प्रदान करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'प्रेक्षाध्यान पद्धति में तनाव मुक्ति हेतु कायोत्सर्ग का प्रयोग निर्दिष्ट है। भय, क्रोध, आसक्ति आदि के वशीभूत व्यक्ति पतन के गर्त में चला जाता है। लोभ के कारण वह हृदयरोग से आक्रान्त हो सकता है। आसक्ति व कषाय के प्राबल्य से व्यक्ति तनाव में चला जाता है। यथार्थ व सकारात्मक अनुचिंतन करने का अभ्यास करें तो तनावमुक्त जीवन की राह प्रशस्त हो सकती है।'

मंत्री मुनिश्री ने कहा--'व्यक्ति के व्यवहार का सबसे बड़ा सूत्र है--वाणी। विवेकशील व्यक्ति सदैव सारपूर्ण व हितपूर्ण वचन बोलता है। वह किसी का अप्रिय नहीं करता। ज्यादा बोलने वाला अपनी गरिमा को कम कर देता है। अपनी जबान को नियंत्रित रखने वाला व्यक्ति सम्मान के योग्य बनता है।'

पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में दोदिवसीय दूसरा प्रेक्षावाहिनी अधिवेशन आयोजित हुआ। अधिवेशन के विभिन्न सत्रों में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। कार्यक्रम में प्रेक्षावाहिनी के निदेशक श्री मर्यादाकुमार कोठारी ने वाहिनी की रिपोर्ट प्रस्तुत की। जैन विश्वभारती के सहमंत्री श्री अरविन्द गोठी ने आभार ज्ञापित किया। देश भर में सक्रिय प्रेक्षा वाहिनी से संबंधित लगभग चौवन भाई-बहनों ने अधिवेशन में भाग लिया। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, केलवा की प्राध्यापिका श्रीमती सुन्दर शर्मा ने अपने विचार रखे।

इन दिनों विभिन्न क्षेत्रों से संघ बड़ी संख्या में गुरु दर्शनार्थ एवं सेवार्थ आए हुए हैं। संघबद्ध होकर आए लोग गुरु उपासना का लाभ ले रहे हैं। कार्यक्रम में बोरावड़ से समागत श्रीमती विजया बाफना, गुवाहाटी से समागत श्री विजयसिंह चोरड़िया व महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सरोज सुराणा, गंगाशहर के श्री लूणकरण छाजेड़, व वहां की तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री हंसराज डागा ने अपने उद्गार व्यक्त किए। मुनि जयकुमारजी ने अपनी विचाराभिव्यक्ति के साथ आदर्श साहित्य संघ द्वारा प्रकाशित '**महाप्रज्ञ ने कहा भाग-४४**' पूज्यप्रवर को उपहृत किया। महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया ने 'श्राविका गौरव' के रूप में श्रीमती प्रेम सेठिया (दिल्ली) व प्रतिभा पुरस्कार के लिए मजिस्ट्रेट शोभना गेलड़ा के चयन की घोषणा की।

चतुर्मास के प्रारंभ में आयोजित जैन विद्या कार्यशाला एवं कर्मवाद कार्यशाला में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने में सफल संभागियों को रात्रि में जसोल तेरापंथ युवक परिषद द्वारा पूज्यवर की सान्निधि में प्रमाणपत्र

व अन्य पारितोषिक प्रदान किए गए। मुम्बई के सुप्रसिद्ध लीलावती हास्पिटल के मालिक श्री राकेश मेहता ने आचार्यवर के दर्शन किए और समसामयिक स्थितियों पर चर्चा की।

बुढ़ापा अभिशाप नहीं, वरदान बने

१ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में प्रातःस्मरणीय परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा—‘वार्धक्य का प्रारंभ जीवन के आठवें दशक से होता है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का मंतव्य था कि सत्तर वर्ष का आदमी वृद्ध नहीं होता। ऐसा व्यक्ति अनुभवप्रवण होता है। वृद्धावस्था में शरीर अक्षम हो जाता है। उस समय उसे सेवा की अपेक्षा रहती है। वृद्ध लोग यह सोचें कि उन्हें परावलंबी नहीं बनना है। जितना संभव हो सके, उतना परावलंबन का परिहार करें। संस्कृत में कहा गया है कि सेवा करने से आयु बढ़ती है। बल व यश में अभिवृद्धि होती है, विद्या का विकास होता है। आजकल स्थान-स्थान पर वृद्धाश्रम बनने लगे हैं। वृद्धावस्था में भी शान्ति व समाधि के साथ जीवन व्यतीत हो। वयःप्राप्त लोगों के जीवन में निकम्मापन न हो, वे आध्यात्मिक दृष्टि से सक्रिय रहें। इससे बुढ़ापा अभिशाप नहीं, वरदान बन सकता है।’ प्रवचनोपरान्त पूज्य आचार्यप्रवर ने ‘डालिम चरित्र’ आख्यान का वाचन किया।

कानपुर सभा के तत्त्वावधान में उत्तर प्रदेश के १६ क्षेत्रों का संघ गुरु दर्शनार्थ जसोल पहुंचा। संघ की ओर से उत्तर प्रदेश तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री कैलाश सिंघी, पंचकुला (हरियाणा) सभा की ओर से श्री लखपतराय जैन, पूना से समागत श्री महेन्द्र मरलेचा ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। भायन्दर (मुम्बई) के युवकों ने तथा शाहदरा (दिल्ली) की बहनों ने गीत के माध्यम से अपनी भावनाएं रखीं। अणुव्रत समिति, कानपुर के अध्यक्ष श्री मदनलाल व मंत्री श्री टीकमचन्द सेठिया ने अणुव्रत के संकल्प पत्र भेंट किए। तेरापंथी सभा, शाहदरा (दिल्ली) के अध्यक्ष श्री भानुप्रकाश बरड़िया एवं मंत्री श्री सुभाष सेठिया ने सभा की रजतजयंती के संदर्भ में अपने क्षेत्र के घर-घर में वितरित किया जा रहा चित्र श्रीचरणों में उपहृत किया। पंचकुला के चौदह वर्षीय किशोर हिमांशु गोयल ने स्वयं द्वारा लिखित उपन्यास पूज्य चरणों में समर्पित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

आज मीरा-भायन्दर म्युनिसिपल कारपोरेशन की मेयर केटलिन परेरा ने आचार्यवर के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया। जसोल के श्री एस.एन.बोहरा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में छात्रों व अध्यापकों के मध्य मुनि मदनकुमारजी का वक्तव्य हुआ।

अहिंसाधारित हो जीवनशैली

२ अक्टूबर। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा—‘साधु का जीवन अहिंसामय होता है। उनके दर्शन से अहिंसा, संयम व त्याग-तपस्या की प्रेरणा मिल सकती है। ऐसे साधुओं की सेवा, उपासना करना भी अच्छा है। जैन साध्याचार में अहिंसा पर विशेष ध्यान दिया गया है। शरीर, मन, वाणी से हिंसा हो जाती है। मानसिक हिंसा सबसे खराब है। इससे वाचिक व कायिक हिंसा भी हो सकती है। व्यक्ति का भाव बंधन और मुक्ति का कारण है। जिस हिंसा से व्यक्ति बच सकता है, उससे बचने का प्रयास करना चाहिए।’

महात्मा गांधी के जन्मदिवस के संदर्भ में आयोजित होने वाले ‘विश्व अहिंसा दिवस’ पर आचार्यवर ने कहा—‘गांधीजी का जीवन अहिंसा से भावित था। यह भारत का सौभाग्य है कि गांधी जैसा महापुरुष इस भूमि पर पैदा हुआ। गांधीजी इन्द्रिय विजय का अभ्यास करने वाले एक साधक एवं मनस्वी व्यक्ति थे। उनका जीवन प्रेरणादायी था। गांधीजी के जीवन व दर्शन से हिंसा से बचने का उपाय प्राप्त किया जा सकता है। स्वतंत्रता के आन्दोलन में उन्होंने अहिंसा को ही शीर्ष पर रखा।’ आचार्यवर ने आगे कहा—‘राजनीति, अर्थनीति, धर्मनीति, समाजनीति, राष्ट्र व्यवस्था एवं पारिवारिक संदर्भ में सभी जगह व्यक्ति अहिंसा आधारित

जीवनशैली को अपनाने का प्रयास होना चाहिए। गृहस्थ को विवेकपूर्वक अपने जीवन को अहिंसामय बनाने का प्रयत्न करना चाहिए' आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव : एक कीर्तिमान

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद ने अपने स्थापना दिवस १७ सितम्बर को लक्षित कर एक महत्त्वपूर्ण एवं समाजोपयोगी उपक्रम के अन्तर्गत एक लाख यूनिट रक्त एकत्रित करने का लक्ष्य निर्धारित किया। पूरी प्लानिंग के साथ अपनी सभी शाखा परिषदों को सक्रिय करते हुए अभातेयुप इस विराट कार्य के लिए सन्नद्ध हुई। राष्ट्रपति कार्यालय से इस अखिल भारतीय अभियान की सफलता के लिए सन्देश प्राप्त हुआ। अनेक धर्मगुरुओं तथा विभिन्न राज्यों के राज्यपाल, मुख्यमंत्री और प्रमुख विभागों के मंत्रियों से लेकर महानगरों के महापौर तथा अन्य विशिष्ट महानुभावों ने इस उपक्रम को अपना पूरा समर्थन और सहयोग दिया। राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षणिक क्षेत्र के अग्रणी लोगों ने तथा सिनेमा और खेल जगत की शीर्ष हस्तियों ने इस अभिनव उपक्रम में अपनी रुचि दिखाई। फलस्वरूप १७ सितम्बर २०१२ को संपूर्ण देश में 'जय तेरापंथ, जय महाश्रमण' के उद्घोष के साथ इस विराट उपक्रम की शुरुआत हुई और एक ही दिन में भारत के पन्द्रह राज्यों तथा नेपाल के २७६ शहरों के ६७१ रक्तदान केन्द्रों में लगभग ६६००० यूनिट्स ब्लड एकत्र करके एक कीर्तिमान स्थापित कर दिया। अभातेयुप के अध्यक्ष श्री संजय खटेड़ तथा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के राष्ट्रीय संयोजक श्री राजेश सुराणा द्वारा प्राप्त महत्त्वपूर्ण जानकारियां अग्रांकित विन्दुओं में प्रस्तुत हैं--

भारत के विभिन्न प्रान्तों में रक्तदान के द्वारा एकत्रित ब्लड (यूनिट्स में) इस प्रकार है--

राजस्थान १६१६३, गुजरात १३१०१, मध्यप्रदेश ३११२, छत्तीसगढ़ १५८३, महाराष्ट्र १६८६०, हरियाणा ७०७४, पंजाब ३११३, दिल्ली २२३०, कर्नाटक ५५७४, तमिलनाडु ११५६१, आन्ध्र प्रदेश ३६७०, ओडिशा १७७६, पश्चिम बंगाल ६२४५, असम १६२३, बिहार १७४८, नेपाल ५६४ यूनिट्स।

- दिल्ली में खेल व युवा मामलों के केन्द्रीय मंत्री श्री अजय माकन ने दिल्ली के दो केन्द्रों का उद्घाटन किया। भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय 'नाको' जो देश भर की ब्लड बैंकों का नियमन करता है, उसने मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव (MBDD) को पूरा सहयोग देते हुए राज्यों के ब्लडबैंक अधिकारियों को इस मुहिम में शामिल होने के निर्देश दिए।
- कर्नाटक विधान सभा परिसर में रक्तदान शिविर आयोजित हुआ, जिसमें वहां के विधि मंत्री सुरेशकुमार ने रक्तदान किया। कर्नाटक सरकार ने बीस हजार पोस्टर छपवाकर राज्य में प्रसारित किए। बेंगलुरु की महानगरपालिका द्वारा MBDD के प्रचार हेतु ७५ एम्बुलेंस निःशुल्क उपलब्ध करवाई गईं तथा अनेक होर्डिंग्स लगवाए गए।
- कोलकाता में राज्य प्रशासन द्वारा दस ट्राम प्रचार-प्रसार हेतु उपलब्ध करवाए गए, जिन्हें MBDD के पोस्टरों से सजाया गया। दो महीने तक लगातार पांच वैन प्रचार-प्रसार के लिए लगाई गईं।
- मुम्बई की बेस्ट बसेज में ३५०० बसों के स्क्रीन पर मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव का प्रचार-प्रसार हुआ। वहां की नगरीय परिवहन प्रणाली (बेस्ट सर्विस) ने इस कार्य के लिए लगाई गई पचास बसों को इस महा अभियान के पोस्टर-बैनर से सजाया।
- जयपुर में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने रक्तदान शिविर का अवलोकन करते हुए इस उपक्रम की सराहना की।
- जयपुर में सीकर रोड पर स्थित भारतीय सैन्य छावनी की दक्षिण पश्चिम कमान के मुख्यालय में भी रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में भारतीय सेना के दो सौ जवानों ने रक्तदान किया।

- पड़ोसी देश नेपाल, भूटान में भी इस लोकोपयोगी उपक्रम को व्यापक समर्थन मिला। नेपाल में पांच बड़े शिविरों का आयोजन हुआ।
- इस विराट उपक्रम हेतु सूरत में एक कंट्रोल रूम स्थापित किया गया। इसके माध्यम से संपूर्ण उपक्रम को व्यवस्थित रूप में संचालित किया गया। गत छह महीनों से कार्यकर्ताओं ने देर रात तक जागकर अपनी निष्ठापूर्ण सेवाएं दीं। वेबसाइट, साफ्टवेयर आदि के माध्यम से उपक्रम को युगीन रूप में प्रस्तुत किया गया।
- सूरत में स्थापित MBDD के कंट्रोल रूम से हॉटलाइन के द्वारा क्षण भर में देश के किसी भी संभाग से संपर्क स्थापित करने के लिए साफ्टवेयर की व्यवस्था थी। यहां से देश भर में एकत्रित रक्त की यूनिटों का सीधा प्रसारण किया गया।
- उपक्रम की सफलता में अभातेयुप की शाखा परिषदों के साथ संपूर्ण तेरापंथ समाज का उत्साह और सहयोग उल्लेखनीय है। अन्य जैन और जैनेतर समाज ने भी अपना भरपूर सहयोग प्रदान किया।
- विभिन्न स्थानों पर ब्लड बैंकों की केपिसिटी की अल्पता के कारण अनेक लोग रक्तदान से वंचित भी रहे।
- अनेक दृष्टियों से यह विराट उपक्रम तेरापंथ धर्मसंघ की प्रभावना करने वाला सिद्ध हुआ। अभातेयुप परिवार इस विराट आयोजना के लिए बधाई का पात्र है।

मासखमण तपस्याएं

- **बेंगलुरु** में साध्वी पीयूषप्रभाजी की सन्निधि में सात मासखमण तप हुए हैं--श्री अनिलकुमार गन्ना, श्री अनिल गादिया, श्री उगमराज लोढ़ा, श्री संदीप बागरेचा, श्रीमती मनोरमा मनोहर बाफना, श्रीमती वनिता दिनेश पोरवाल एवं श्रीमती संगीतादेवी जितेन्द्र देवड़ा।
- **रतनगढ़** में साध्वी रामकुमारीजी (लाडनू) की सन्निधि में श्री छतरसिंह शुभकरण बैद एवं श्रीमती सरलादेवी सुरेश बैद ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **भीलवाड़ा** में साध्वी नगीनाजी की सन्निधि में श्री अशोक खाब्या, श्रीमती पायल पिछोलिया एवं श्रीमती पिस्तादेवी रांका ने मासखमण तपस्या की है।
- **दिल्ली (पीतमपुरा)** में साध्वी विद्यावतीजी 'द्वितीय' की सन्निधि में श्री सुशील जैन (सुपुत्र-स्व. लिखमीचन्द्र जैन) ने मासखमण तप व दो वर्षीया कीर्ति मालू ने संवत्सरी उपवास किया है।
- **दिल्ली (शाहदरा)** में शासनश्री मुनि सुखलालजी के सान्निध्य में श्री पारसमल बोथरा ने मासखमण तप किया है।
- **दिल्ली (ग्रीनपार्क)** में साध्वी यशोमतीजी की सन्निधि में श्रीमती सरोज सुन्दरजी मालू ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **सिलीगुड़ी** में साध्वी निर्वाणश्रीजी की सन्निधि में श्री किशनलाल धाड़ेवा एवं श्रीमती कान्तादेवी संदीप श्यामसुखा ने मासखमण तप किया है।
- **नोखा** में साध्वी विनयश्रीजी की सन्निधि में श्रीमती जयश्रीदेवी निर्मल भूरा एवं श्रीमती सरोजदेवी हंसराज पारख ने मासखमण तप किया है।
- **रतलाम** में मुनि तत्वरुचिजी के सान्निध्य में श्री विक्की राजेन्द्रकुमार दक ने मासखमण तप किया है।
- **इन्दोर** में साध्वी कनकश्रीजी (राजगढ़) की सन्निधि में श्रीमती सुनीतादेवी प्रवीण जैन, श्रीमती टीनादेवी विकास जैन एवं श्रीमती पिकी प्रदीप गोखरू ने मासखमण तप संपन्न किया है।
- **नाथद्वारा** में साध्वी शान्ताकुमारीजी की सन्निधि में श्री भूपेन्द्र बागरेचा ने मासखमण तप किया है।

- **पेटलावद** में साध्वी कुन्दनप्रभाजी की सन्निधि में श्रीमती शकुन्तलादेवी रमेशकुमार ने मासखमण तप किया है।

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी : निर्धारित परियोजनाएं-६

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी वर्ष में गुरुकुलवास में समायोज्य चार चरणों के सप्तदिवसीय कार्यक्रम इस प्रकार निर्धारित किए गए हैं--

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी : प्रथम चरण (साप्ताहिक कार्यक्रम)

दिनांक	विषय	स्थान
५ नवम्बर २०१३	आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी : शुभारंभ समारोह	लाडनू
६ नवम्बर २०१३	आचार्य तुलसी : साहित्य साधना	लाडनू
७ नवम्बर २०१३	आचार्य तुलसी : क्रान्त विचार	लाडनू
८ नवम्बर २०१३	आचार्य तुलसी : प्रबन्धन कौशल	लाडनू
९ नवम्बर २०१३	आचार्य तुलसी : सुदीर्घ यात्राएं	लाडनू
१० नवम्बर २०१३	आचार्य तुलसी : निर्माण कौशल	लाडनू
११ नवम्बर २०१३	आचार्य तुलसी : जीवन गौरव यात्रा	लाडनू

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी : द्वितीय चरण (साप्ताहिक कार्यक्रम)

३० जनवरी २०१४	आचार्य तुलसी और आगम सम्पादन	गंगाशहर
३१ जनवरी २०१४	आचार्य तुलसी और शिष्य सम्पदा	गंगाशहर
१ फरवरी २०१४	आचार्य तुलसी और जैन विश्वभारती	गंगाशहर
२ फरवरी २०१४	आचार्य तुलसी और संघीय संस्थाएं	गंगाशहर
३ फरवरी २०१४	आचार्य तुलसी और शैक्षणिक क्रान्ति	गंगाशहर
४ फरवरी २०१४	आचार्य तुलसी और अभिनव उन्मेष	गंगाशहर
५ फरवरी २०१४	आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी : द्वितीय चरण मुख्य समारोह	गंगाशहर

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी : तृतीय चरण (साप्ताहिक कार्यक्रम)

६ सितम्बर २०१४	आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी : तृतीय चरण, मुख्य समारोह	दिल्ली
७ सितम्बर २०१४	नैतिकता के प्रतिष्ठापक-आचार्य तुलसी	दिल्ली
८ सितम्बर २०१४	अध्यात्म के पथदर्शक-आचार्य तुलसी	दिल्ली
९ सितम्बर २०१४	मूल्यपरक शिक्षा के उन्नायक-आचार्य तुलसी	दिल्ली
१० सितम्बर २०१४	साम्प्रदायिक सौहार्द के पुरोध-आचार्य तुलसी	दिल्ली
११ सितम्बर २०१४	समाजोत्थान के संदेशवाहक-आचार्य तुलसी	दिल्ली
१२ सितम्बर २०१४	राष्ट्रीय समस्याओं के समाधायक-आचार्य तुलसी	दिल्ली

आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी : चतुर्थ चरण (साप्ताहिक कार्यक्रम)

१६ नवम्बर २०१४	विश्वशान्ति और अणुव्रत	दिल्ली
२० नवम्बर २०१४	पर्यावरण और अणुव्रत	दिल्ली

२१ नवम्बर २०१४	राजनीति और अणुव्रत	दिल्ली
२२ नवम्बर २०१४	व्यवसायशुद्धि और अणुव्रत	दिल्ली
२३ नवम्बर २०१४	मानवीय मूल्य और अणुव्रत	दिल्ली
२४ नवम्बर २०१४	नैतिकता और अणुव्रत	दिल्ली
२५ नवम्बर २०१४	आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी समापन समारोह	दिल्ली

पूज्यप्रवर द्वारा नवीन घोषणाएं

- २ अक्टूबर को पूज्यवर ने घोषणा की--'२०१३ में लाडनूं से पूर्व नागोर का स्पर्श करने का भाव है।'
- ४ अक्टूबर को आचार्यवर ने घोषणा की--'भविष्य में जब कभी मैं (आचार्य महाश्रमण) मेवाड़ में यदि मर्यादा महोत्सव करूंगा तो प्रथम मर्यादा महोत्सव चिताम्बा में करने का भाव है।'
- सन् २०१३ में चिताम्बा में साधुओं अथवा साध्वियों का चतुर्मास देने का भाव है।
- तपस्या के संदर्भ में होने वाले भोज में साधु-साधवियां गोचरी न करें।
विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

२१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती शकुन्तला गोयल (धर्मपत्नी-श्री महावीर गोयल, जालन्धर छावनी) की तीसरी पुण्यतिथि पर उनके सुपुत्र पंकज, अमित गोयल व गोयल परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व.श्री रामलाल जैन (गुड़गांव) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मदनसुन्दरी एवं सुपुत्र डा. संजय जैन द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री मोतीलालजी कोठारी (छापर-दिल्ली-गुवाहाटी) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती संपतदेवी, सुपुत्र प्रमोद, सुपौत्र सिद्धार्थ, अरिहंत, सुपौत्री खुशबू कोठारी, द्वारा-मालचन्द मोतीलाल कोठारी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती बदामबाई गांग (भीमगढ़) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र घीसूलाल, शंकरलाल, संपतलाल, कैलाशचन्द, पूर्णमल, सुपौत्र विनोद, संतोष, प्रकाश, राजेश, कमलेश, संजय, मनीष, मुकेश, भरत, चिन्तन, विकास, महावीर गांग द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती अनु कागोत, जगदलपुर (छत्तीसगढ़) की ११ दिन की तपस्या के उपलक्ष्य में पारसमल अनिलकुमार कागोत द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री धर्मचन्दजी बैद (सुपुत्र-स्व. चंपालालजी बैद, राजलदेसर-सिलीगुड़ी) के १५ की तपस्या के उपलक्ष्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीलादेवी एवं सुपुत्र राकेश, मुकेश, सुरेश बैद द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति,

पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ६६८००५५३८९, ६३५२४०४६४९

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४९ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

